धूप के हस्ताक्षर
- डॉ. मीना शुक्ला

धूप के हस्ताक्षर

डॉ. मीना शुक्ला
की रचनाएँ

प्रकाशक
चन्द्रहास शुक्ल
एफ 124/39, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462016 (म.प्र.)

विकास ऑफसेट प्रिंटर्स
एण्ड पब्लिशर्स
45-सेक्टर-एफ, औद्योगिक क्षेत्र,
गोविन्दपुरा, भोपाल
फोनः 0755-2601952

प्रथम संस्करण
वर्ष 2012

मूल्य
नहीं

सर्वाधिकार - डॉ. मीना शुक्ला

अनुक्रम

अपने समय और समाज से संवाद करती कविताएं	05	गली-मोहल्ले	35
		दर्पण को रखो पास	36
अपनी बात	11	खुशबुओं के पाठ	37
रेशमी तटबंध	13	देखन कोई सपन	38
लाद दिए	14	कान लगाये दीवारों में	39
द्वार-द्वार फैलाये	15	लिपटकर पाँवों में	40
लिखते नहीं	16	कहीं नहीं हैं सच	41
निकलता है	17	तुम बनो बरगद	42
भीड़ में चलते हुए	18	किस्सा कभी कहानी-लोरी	43
जंगल में	19	ढाँपकर फिर गल्तियाँ	44
धूप की देहलीज़ पर	20	धूप-पानी	45
गूँगे प्रश्नचिन्हों	21	कैसे कहाँ सम्हालें ?	46
घँटियाँ बजीं	22	देहलीज़ों पर	47
रात गये	23	सम्हलकर उस पार	48
सारे प्रश्न उसे हल करने	24	जुड़े हुए	49
टूटे पँखों पर	25	मिला लिये हैं	50
आखिर क्यों ?	26	लगीं बुलाने	51
उत्सव-तमाशे	27	आँख में	52
जलते अलावों को	28	फूलों का आधार लिया	53
कभी इधर से	29	कथायें पुरानी है	54
बहुत दिनों से	30	इन हवाओं की	55
चमगादड़ों की बस्ती में	31	नीम की डालों से	56
परम्पराओं के बहाने	32	यह भी कोई बात हुई ?	57
धूप की है शर्त जलना	33	लगता है पाँवों के नीचे	58
नक्षत्रों की छाया में	34	व्यवस्थाओं में	59

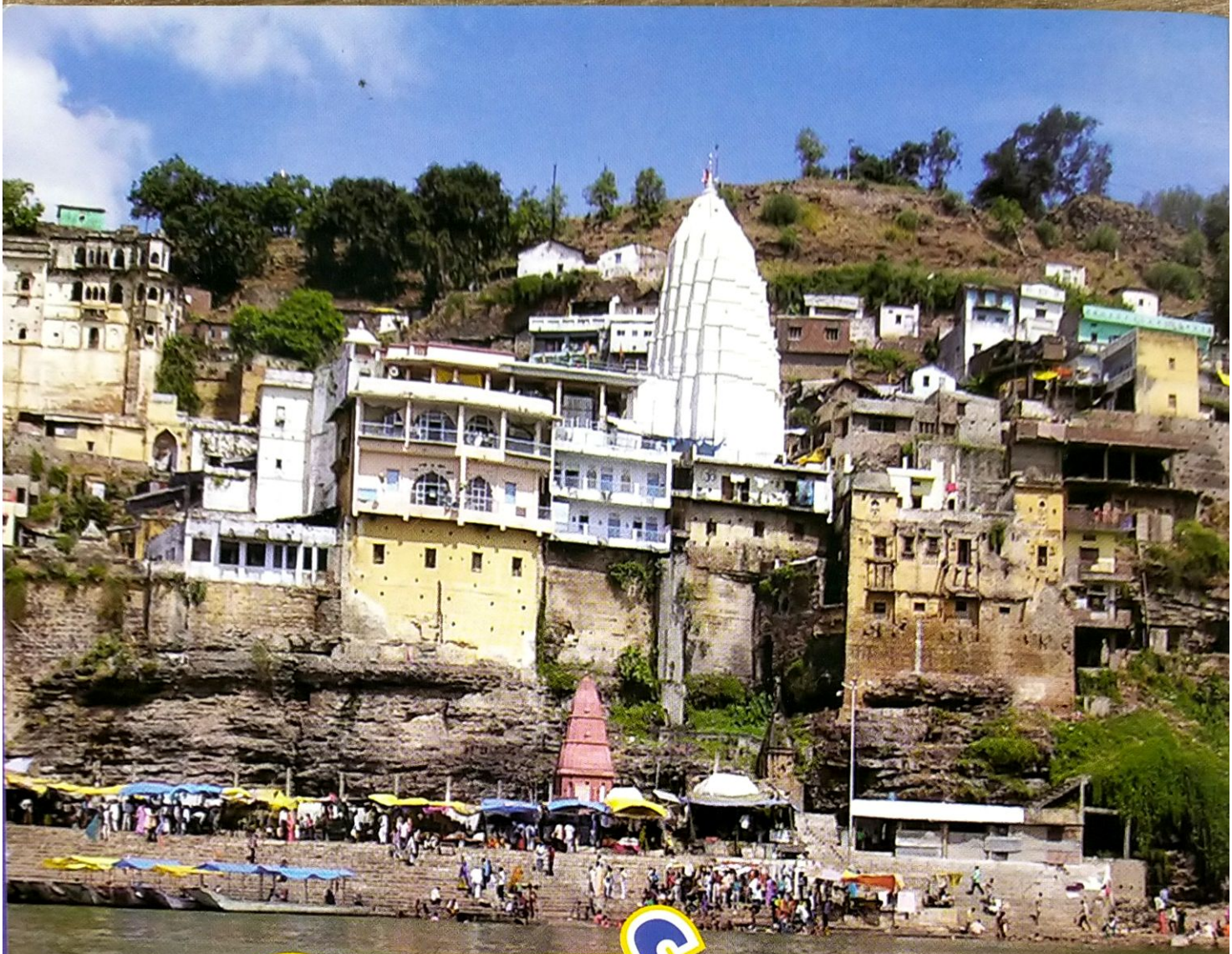

आवर्त लहरों के

- डॉ. मीना शुक्ला

आवर्त लहरों के

डॉ. मीना शुक्ला
की रचनाएँ

प्रकाशक
चन्द्रहास शुक्ल
एफ-124/39, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462016 (म.प्र.)

मुद्रक
विकास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स
45, सेक्टर-एफ, औद्योगिक क्षेत्र,
गोविंदपुरा, भोपाल, फोनः 0755-2601952

प्रथम संस्करण
वर्ष 2014

मूल्य
नहीं

सर्वाधिकार - डॉ. मीना शुक्ला

अनुक्रम

भूमिका	05	हजार हाथ वाले	30
अपनी बात	07	मत करो	31
बदहाल मौसम	09	हिमकण से जलकण	32
पिछला अनुवाद	10	यदि पलकों की छाया में	33
दुनिया के मेल में	11	कितने पानी में	34
उतरे जब सागर के पार	12	राजभवन की पगडण्डी से	35
जादू की छड़ी है	13	छोटी कथा हूँ	36
रात लगी घूँघट सरकाने	14	अन्तिम उपसंहार	37
एकलव्य के अँगूठे	15	सन्धि पत्र पर	38
टकराते सवाल	16	चन्दन बन जाते हैं	39
प्रयोगशाला जीवन	17	महाकुम्भ में आने वाले	40
सरोवर के कमल	18	बस यह वरदान चाहिए	41
बादल ने क्या कहा	19	अभियान-विजय पथ	42
आदमी बेचारा	20	हिमगिरि का है उपकार बहुत	43
सूरज की आँख	21	बिन-बुलाये	44
रिश्तों की तुरपाई	22	प्रीत पुरानी बचपन की	45
एक छोर धरती	23	गुणा-भाग में बीते दिन	46
माँ	24	हिरनी-सी आँखों के घेरे	47
नकद का सौदा	25	चन्दन की घाटी है	48
चीड़ पर चाँदनी	26	अपरिचित हो गये घर में	49
ढाई आखर	27	दोपहरी	50
मुसाफ़िर खाना	28	घर से निकले	51
याद-तुम्हारी	29	जी गये	52

लहर-लहर पाती नदिया की

- डॉ. मीना शुक्ला

लहर-लहर पाती नदिया की

✵

सर्वाधिकार/ डॉ. मीना शुक्ला

✵

प्रथम संस्करण

वर्ष 2016

✵

ISBN : 978-93-82950-33-2

✵

मूल्य

रुपये : 200/-

✵

आवरण/शब्द संयोजन

संदीप बागड़े

मो.नं. 9424444091

✵

मुद्रक

विकास आफसेट

भोपाल

✵

प्रकाशक

धर्मोदय साहित्य प्रकाशन

जैन मंदिर के पास, बाहुबली कॉलोनी,

सागर (म.प्र.)

मो.: 094249-51771

✵

सम्पर्क

डॉ. मीना शुक्ला

शासकीय गृह विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय

होशंगाबाद (म.प्र.)

अनुक्रम

काँधे पर	15
हो अशेष तम	16
पुनर्जन्म की	17
जलते अंगारों पर	18
जय-जयकारों से	19
राजमार्ग हो या पगडण्डी	20
यह सच है	21
पत्र तुम्हारा पढ़ा	22
कण-कण में जो	23
दिल में कितना	24
यहाँ कहाँ पूरा विश्राम	25
यायावर बादल ने	26
रूठ-रूठ कर जाने वाले	27
अपनी-अपनी ध्वजा	28
समुन्दर की मछलियाँ	29
नयन में है नीर क्यों	30
हवा से आगे	31
रंग-रंगीली ऋतुओं वाला	32
हिम-सा शुभ्र	33
भारत माँ के माथे की	34
धार-धार गिरता	35
जब से पकड़ी है	36
साँसों की डोर में	37
लम्बी एक प्रतीक्षा	38
हर गली पर	39
कागज पर	40
भवानी आ गई	41
मावस के बेटे ने	42
मुन्ने सो जा	43
ऋतु वसन्त में	44
किस तरह से	45
गोपद इव	46
महल ताश का	47
चन्दन पानी	48
रिमझिम-रिमझिम	49
मन कस्तूरी	50
शब्द हो गए मूक	51
चुन-चुन मोती	52
अमराई की कोकिला	53
थम जायेगी	54
पलकें जैसे इन्द्रधनु	55
सिरहाने पर चाँद	56
अपने-अपने किस्से	57

अनुत्तरित

डॉ. मीना शुक्ला

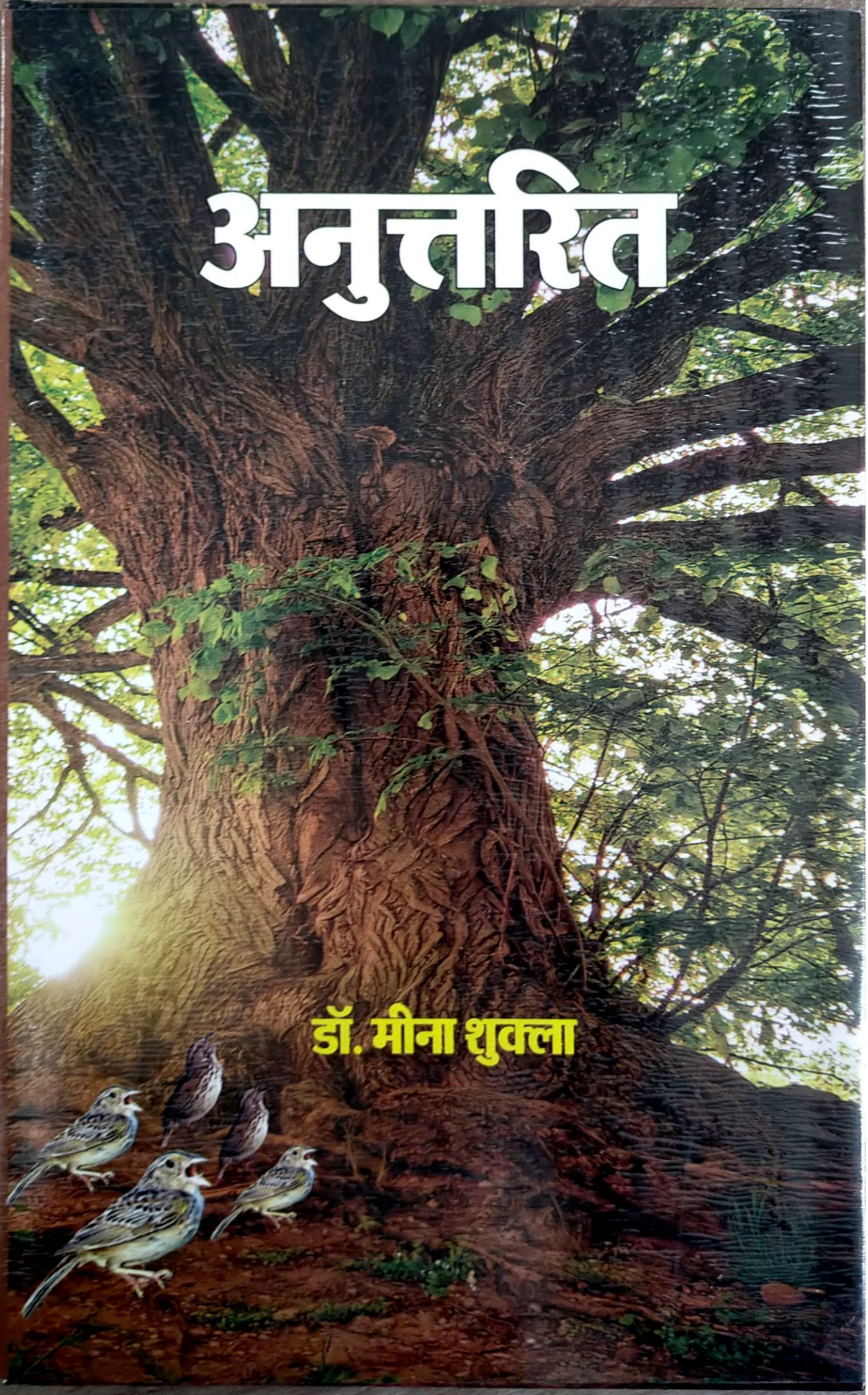

प्रकाशक श्री अमित सक्सेना तथा आकल्पन हेतु श्री संदीप बागड़े को अनेकशः धन्यवाद, जिनके कुशल संयोजन से काव्य-संग्रह को अंतिम रूप मिला।

काव्य संग्रह को पूर्णता प्रदान करने हेतु जिस दौड़-धूप की आवश्यकता होती है, उस उत्तरदायित्व को मेरे अग्रज चन्द्रहास जी ने अपने स्तर पर मौन रहकर सम्पन्न किया, उनके प्रति औपचारिक आभार व्यक्त करूँ तो कम है। अन्त में परम पिता परमात्मा के प्रति कृतज्ञता के सुमन अर्पित करते हुए अपना काव्य-संग्रह "अनुत्तरित" आपके हाथों में सौंपती हूँ।

एफ-1 कमिश्नर कॉलोनी
होशंगाबाद, पिन कोड 461001 म.प्र.

आपकी
(डॉ. मीना शुक्ला)

अनुक्रमणिका

अकेली ही भली	15
गीत शीत में	16
तुम्हारे नाम कर दूँ	17
ढाई आखर	18
गगन में सूर्य आने की	19
खद्योतों के आगे	20
काँधे टूट गये	21
सम्वादों में	22
झूठ कुतुबमीनारों-सा	23
कागज की नाव	24
परदेसी रंगरेज	25
चुप्पी पहने	26
धूल का फूल	27
भीगी शाम	28
सिर पर छत है	29
नाम नहीं हैं	30
पग-पग गंगाजल	31
पत्तियों के कान में	32
हर सिंगार की डाली	33
एक नदी	34
डूब गई शाम	35
प्रारब्धों के कर्ज	36
गुमसुम नदी	37
गुम इतिहास	38
हे राम! बताओ	39
हवाओं पर लिख दो	40
पता हूँ	41
रात भर बादल	42
अभी देर है	43
जो भी मेरे पास रहे	44
एक हथेली	45
सपनों में सेंध	46
एक धागा टूटता है	47
गूँगे सम्वाद	48
दो कौड़ी की	49
अम्बर के कानों में	50
चुटकी भर चन्दन	51
आज और कल	52
जिन्दगी खड़ी है द्वार पर	53
उजली भोर	54
पूरे बारहमास	55
सम्भव नहीं होता	56
चुभी सुई	57
तप रहा आकाश	58

समय के साथ

डॉ. मीना शुक्ला

समय के साथ - डॉ. मीना शुक्ला

*

सर्वाधिकार - डॉ. मीना शुक्ला

*

प्रथम संस्करण

वर्ष 2017

*

ISBN : 978-81-933740-0-9

*

मूल्य

रूपये : 250/-

*

आवरण/शब्द संयोजन

संदीप बागड़े

मो. नं. 9424444091

*

मुद्रक

विकास आफसेट, भोपाल

*

प्रकाशक

अमित प्रकाशन

एच.आई.जी.-3, क्वालिटी होम्स,

कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)

*

सम्पर्क

डॉ. मीना शुक्ला

शासकीय गृह विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय

होशंगाबाद (म.प्र.)

अनुक्रम

15. करूणा निधान
16. आस्था प्रबल दे
17. साँझ का दिया
18. दीपकों से कहो
19. शाम ढली जाती है
20. ओस भीगी पाँखुरी
21. मौसम
22. छाले पड़ जाते
23. देहरी हो जाना
24. सरस रहो
25. नीरव नभ के बीच
26. देखा मैंने
27. नभ के
28. नई ऊष्मा
29. पोखर-ताल-तलैया
30. तुड़े-मुड़े अखबारों से
31. कौन जाने
32. तुम नदी सी
33. नदी के स्वर
34. स्वर्ण मृग
35. मूक अधरों पर
36. मोम के बन्धन
37. बिगड़े दस्तूर
38. दूर कितनी
39. मन के ताजमहल
40. वसन्त हो गया
41. लहरों की गवाही
42. ग्लेशियर पिघले
43. कबीर की बानी
44. आसमान के तारे
45. अन्त में महक रहे
46. दिनों का फेर
47. सिंहासन पर राजा
48. मानसरोवर में
49. शहर अन्धकार का
50. युग बदले
51. बात गई
52. बड़े झमेले हैं
53. उजाले गाने दो
54. वेदना की कोख से
55. श्रम की स्याही
56. उत्सव-त्यौहार करो
57. भारत माँ के लाल
58. ढँके हुए चेहरे हैं

Changing Status of Women in the Indian Society

भारतीय समाज में महिलाओं का बदलता हुआ परिदृश्य

Dr. Ashish Gupta
Dr. Sadhna Dehariya

Xpress: An Imprint of Notion Press

India. Singapore. Malaysia.

ISBN 978-1-64951-159-1

Disclaimer–
The responsibility for facts stated, opinion expressed or conclusions reached and plagiarism, if any. In this book, is entirely that of the author for his/her paper/abstract. The college authorities, editors and publisher bear no responsibility for them whatsoever.

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the author. No part of this book shall be used, reproduced in any manner whatsoever without written permission from the author, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews.

The Author of this book is solely responsible and liable for its content including but not limited to the views, representations, descriptions, statements, information, opinions and references ["Content"]. The Content of this book shall not constitute or be construed or deemed to reflect the opinion or expression of the Publisher or Editor. Neither the Publisher nor Editor endorse or approve the Content of this book or guarantee the reliability, accuracy or completeness of the Content published herein and do not make any representations or warranties of any kind, express or implied, including but not limited to the implied warranties of merchantability, fitness for a particular purpose. The Publisher and Editor shall not be liable whatsoever for any errors, omissions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause or claims for loss or damages of any kind, including without limitation, indirect or consequential loss or damage arising out of use, inability to use, or about the reliability, accuracy or sufficiency of the information contained in this book.

Contents

SECTION- I {English}

1. The Novels of Manju Kapur: Budding New Woman & Quest for Dignity
   Dr. Ashish Gupta 14-23
2. Privation of females in the Information Technology workforce: Gender enrolment survey from AISHE
   Arpana Agrawal 24-29
3. The Inner Conflicts and Confrontations in the Novels of Anita Desai
   Dr. Amar Nath Prasad 30-30
4. Changing status of Indian Women in Chetan Bhagat's *One Indian Girl*
   Shahnaz Khan 31-31
5. Health and Nutritional Status of Women
   Dr. Reshmi Shrivastav 32-32
6. The Portrait of Women in Society: A Literary Perspective from Meena Kandasamy's *When I Hit You*
   Dr. Aiman Reyaz 32-33
7. Participation of Women in All Over Development in India; From Past to Present
   Dr. Shweta S. Bajpai 33-34
8. Sarojini Naidu: A poet and freedom fighter
   Dr. Ravikant Malviya 34-35
9. Looking at Women through Women's Perspectives
   Sanjeev Kumar Vishwakarma 35-36
10. Role of Woman in Mythology with special reference to Karnad's Naga Mandala
    Dr. Bharti Savetia 36-37
11. Multitudeness of Women in the Ramayana: A Study
    Ms. Seema Shukla 37-37
12. Participation in Sports: A Means to Prevent Harassment
    Akoijam Reshmi Devi 38-38
13. Women Enterprise: Contemporary World
    Pallavi Choudhary 39-40
14. Role of women in the literature
    Varginia Dawande 40-41
15. Role of women in the literature: Indian Women
    Meenakshi Thakur 41-42
16. Role of Public Libraries on Women Empowerment
    Narendra Kumar Nagle 42-43

4.

Changing status of Indian Women in Chetan Bhagat's *One Indian Girl*

Shahnaz Khan
Professor (English) Govt. College, Pandhurna

Abstract

The fact that Chetan Bhagat dedicates his novel 'One Indian Girl' to all the Indian girls who are brave enough to dream and live life as per their choice, speaks volumes of the changing status of women in Indian society. The Prologue too echoes the changing values in terms of marriage and beauty. The bride herself plans her destination wedding in Goa and doesn't bother about her beauty. The popular fiction writer Chetan Bhagat has carved out a completely different image of a young girl Radhika Mehta who, inspite of all the hue and cry by her parents and relatives over her marriage and career issues, takes independent decisions in her life. The novel moves from a patriarchal to matriarchal society bringing the marginalized female identity to the centre. The role of women becomes crucial not only in family matters but also in work places. With the innovative technique of using a mini-me to differentiate a mental Radhika from a speaking Radhika, the author has successfully makes the novel a battle ground where the inner self is at war with the outside world.

Keywords: women, Indian society, patriarchal, matriarchal, marginalized, self.

5.

Health and Nutritional Status of Women

Dr. Reshmi Shrivastav
Professor, Govt. Home Science PG College Hoshangabad(M.P)
Smt Priti Bhade
Guest Faculty, (JBS) Govt Girls College Betul (M.P)

Abstract

Healthy lifestyle and high intake of nutritious food can provide good health throughout life to the humans. Participation of women in different fields has

स्त्री

अस्तित्व से एक कदम आगे...

सम्पादकः डॉ हंसा व्यास

स्त्री
अस्तित्व से एक कदम आगे

संपादक
डॉ. हंसा व्यास

शिवालिक प्रकाशन
दिल्ली वाराणसी

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : 495.00 रुपये

ISBN : 978-93-87195-45-5

इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी अर्थ में संपादक की अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता। सर्वाधिकार लेखक के अधीन है।

© संपादक : डॉ. हंसा व्यास

आवरण : राजा रवि वर्मा की पेंटिंग आधारित छाया चित्र से

प्रकाशक :
शिवालिक प्रकाशन
27/16, शक्तिनगर
दिल्ली-110007
फोन : 011-42351161
ई-मेल : shivalikprakashan@yahoo.com
शाखा कार्यालय
प्लॉट सं. 394, संजय नगर कालोनी
पहरिया, रामदत्तपुर, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

भारत में प्रकाशित

विरेन्द्र तिवारी द्वारा शिवालिक प्रकाशन 27/16, शक्ति नगर, दिल्ली-110007 के लिए प्रकाशित। शब्द संयोजन : फ्रेंड्स ग्राफिक्स, दिल्ली और आर. के. ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Stri

Astitwa Se Ek Kadam Aage

Edited by : **Dr. Hansa Vyas**

अनुक्रम

क्रम सं.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
	कुछ शब्द अपनी ओर से....		5
	प्रस्तावना		7
1.	सती से सशक्तिकरण तक की यात्रा	डॉ. हंसा व्यास	11
2.	आत्मनिर्भर होती नारी और स्वसहायता समूह	डॉ.(श्रीमती) असुन्ता कुजूर	30
3.	महिलायें घरेलू प्रबंध व्यवस्था से उद्यमिता की ओर	डॉ. (श्रीमती) मीना कीर	44
4.	मानव अधिकारों से सशक्त होती महिलाएं	डॉ.(श्रीमती) रश्मि तिवारी	54
5.	आर्थिक विकास एवं महिला सशक्तिकरण	डॉ.(श्रीमती) सविता गुप्ता	64
6.	महिला विकास के राजनैतिक दृष्टिकोण	डॉ. नीता चौबे	75
7.	धन के प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका	डॉ. वर्षा चौधरी	80
8.	समय-व्यवस्थापन एवं महिलायें	डॉ. भारती दुबे	89
9.	महिलाओं के विकास में पोषक तत्वों की भूमिका	डॉ. रश्मि श्रीवास्तव	94
10.	महिला उद्यमियों की समस्याएँ	डॉ. संध्या राय	98

7.

धन के प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका

डॉ. वर्षा चौधरी
प्राध्यापक
होशंगाबाद

परिचय

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में महिलाओं का विशेष महत्व रहा है। समाज के हर क्षेत्र में निरंतर संघर्ष कर महिलाओं ने अपनी प्रतिभा एवं योग्यता साबित की है। लेकिन दुर्भाग्य का विषय है कि आज उनमें स्त्री चेतना सम्पूर्ण रूप से जाग्रत नहीं हो पाई है।

"एक नहीं दो-दो माताऐं नर से भारी नारीं" वहीं नारी आज के सभ्य समाज में असुरक्षित हो गई हैं। किंतु समाज की धुरी आज भी नारी हैं घर और बाहर समाज, कार्यक्षेत्र या विभिन्न स्थानों को जहां आज पुरुष वर्ग अपना अधिकार क्षेत्र समझता था नारी कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है और अपने कार्य का अच्छा परिणाम देकर पुरुषों से ज्यादा पुरस्कृत भी हो रही है।

विकासात्मक सामाजिक व्यवस्था में मानव शक्ति स्त्रोत के महत्वपूर्ण संघटक के रूप में महिला की उपयोगिता सुस्पष्ट हैं। बदली हुई सामाजिक परिस्थितियाँ, समाज सुधार आंदोलन, शिक्षा, पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव, आवागमन एवं संचार संसाधनों में वृद्धि आदि ने महिलाओं पर दूरगामी प्रभाव डाले हैं। आधुनिक करण में महिला की भूमिका जितनी तीव्रता से परिवर्तित हुई है, उतनी पूर्व में नहीं हुई। संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवारों के जन्म से स्त्रियां घर की प्रमुख हो गई हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों में उनको व्यापक अधिकार प्राप्त होने से उनकी निरन्तर प्रगति हो रही है जिससे महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में निरन्तर सुधार आ रहा है।

8.

समय व्यवस्थापन एवं महिलायें

डॉ. भारती दुबे
प्राध्यापक (गृहविज्ञान)
शासकीय गृह विज्ञान महाविद्यालय
होशंगाबाद (म.प्र.)

बचपन में हमें यही सिखाया जाता है कि "Time is Money" शायद शिक्षक के डर से इसे कंठस्थ भी कर लिया था लेकिन इसे वास्तव में कितने लोगों ने जिन्दगी में अपनाया?

समय एक ऐसी चीज है जिसकी व्याख्या शायद कोई ना कर सके, लेकिन अगर हां आपके पास समय है तो आपके पास सब कुछ है। किसी रिश्ते को समय देकर देखिये वो रिश्ता संभलेगा भी और सुधरेगा भी। कभी किसी प्रोजेक्ट पर थोड़ा और समय दीजियेगा, प्रोजेक्ट "More than average" यानी बाकियों से अच्छा होगा। रही बात पैसों की तो दुनिया में वही अमीर हुआ है जिसने समय के मोल को सही वक्त पर पहचान लिया।

आज यह लेख आपको शायद समय को एक अलग नजरिये से देखने में मदद करेगा और साथ ही आपको समय-व्यवस्थापन सिखायेगा। श्री अर्नाल्ड बेन्नेट जी कहते है जब भी आप सुबह उठते है तो आपके पर्स में बिना कुछ किये 24 घंटे यू ही पड़े पड़े मिलते है। ये वो 24 घंटे है जो न कोई आपसे चुरा सकता है, न कोई छीन सकता है और न ही कोई इसे घटा-बढ़ा सकता है। ये आपके है अब आप इसका उपयोग करे या न करे, आपको कोई सजा देने वाला नही। आपसे कोई नही पूछेगा कि आपने 24 घंटों का क्या किया। ये आपकी जिन्दगी है आपके 24 घंटे.....या तो जी लें या इन 24 घंटों को निचोड़ लें।

9.

महिलाओं के विकास में पोषक तत्वों की भूमिका

डॉ. रश्मि श्रीवास्तव
प्राध्यापक (गृहविज्ञान)
शासकीय गृहविज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय
होशंगाबाद

पोषण उन प्रक्रिया का संयोजन है जिनके द्वारा कोई भी जीवित प्राणी भोज्य पदार्थों को प्राप्त कर पोषक तत्वों का उपयोग शारीरिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए वृद्धि के लिए तथा इसके घटकों के पुनः निर्माण के लिए करता है।

किसी भी महिला को अपने दैनिक कार्य करने बीमारियों की रोकथाम तथा सुरक्षित व स्वस्थ प्रसव के लिए अच्छे भोजन की आवश्यकता होती है। लेकिन फिर भी पूरे संसार में किसी अन्य स्वस्थ समस्या की तुलना में महिलाओं को कुपोषण से सबसे अधिक सामना करना पड़ता है जिसके कारण थकावट कमजोरी और बुरा स्वास्थ्य हो सकता है।

महिलाएँ तभी भोजन करती हैं। जब पुरुष व बच्चों ने खा लिया हो अर्थात सबसे अंत में खाती है। भोजन से शरीर को ऊर्जा पौष्टिक तत्व एवं ऊष्णता प्राप्त होती है जिससे शरीर की विभिन्न शारीरिक एवं मानसिक क्रियाएँ सम्पन्न होती हैं। शरीर की वृद्धि एवं विकास तंतुओं की मरम्मत, रोगों से रक्षा नियंत्रण एवं प्रजनन कार्यों के लिए भोजन जरूरी है। भोजन में वे सभी पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में उपस्थित रहते हैं। जो शरीर के सभी कार्यों को सम्पन्न करते हैं। अर्थात मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए लगभग 45 प्रकार के पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है।

राबिन्स के अनुसार - शरीर की विभिन्न जटिल रासायनिक प्रक्रियाओं को सम्पन्न

10.

महिला उद्यमियों की समस्याएँ

डॉ. संध्या राय
प्राध्यापक (गृह विज्ञान)
शासकीय गृहविज्ञान महाविद्यालय
होशंगाबाद (म.प्र.)

वर्तमान में महिला उद्यमशीलता के विकास के लिये सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं एवं संस्थाओं के माध्यम से सुविधाएँ, सहायता एवं मार्गदर्शन प्रदान किये जा रहें है, किन्तु फिर भी उद्यमशील महिलाओं को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। सर्वेक्षण के दौरान उद्यमशील महिलाओं की समस्याओं को निम्नलिखित तीन वर्गों में वर्गीकृत कर प्रस्तुत किया गया है।

1. विशिष्ट सामाजिक दृष्टिकोण के फलस्वरूप ''महिला'' होने के कारण उत्पन्न समस्याएँ।
2. उद्यम संचालन के दौरान आने वाली समसयाऐं।
3. अन्य समस्याएं।

विशिष्ट सामाजिक दृष्टिकोण के फलस्वरूप "महिला" होने के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याएं

उद्यमशील महिलाओं के समक्ष जो सबसे बड़ी समस्या है वह यह है कि वह महिला है और परिवार व समाज का उनके प्रति एक पूर्वाग्रही दृष्टिकोण है। यह वृत्ति और विशिष्ट दृष्टिकोण महिलाओं को उद्यम क्षेत्र में प्रत्येक स्तर पर यथा-उद्यम के चयन, क्रियान्वयन एवं संचालन में समस्याएं उत्पन्न करता है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि भारतीय समाज ''पुरुष प्रधान'' है। जिले में भी परिवार व समाज में महिलाओं की परंपरागत भूमिका है। मुख्यतः बच्चों बच्चों का पालन-पोषण,

PROSPECTS OF ECOTOURISM AND ECONOMY IN MADHYA PRADESH

Editor
Dr. Mamta Shrivastava
Asstt. Prof. (English)
Govt.Veer Savarkar College
Obedullahganj, Raisen (M.P.)

PROSPECTS OF ECOTOURISM AND ECONOMY IN MADHYA PRADESH

Editor
Dr. Mamta Shrivastava
Assistant Professor,
Department Of English
Govt. Veer Savarkar College
Obedullahganj, Raisen (M.P.)

Pahalepahal Prakashan
Bhopal

पारिस्थितिक पर्यटन एवं मध्यप्रदेश का विकास 183
प्रो. ईश्वरशरण विश्वकर्मा

मध्यप्रदेश में पर्यावरण-पर्यटन 189
डॉ. खुमेश सिंह ठाकुर, डॉ. जी.एल. मालवीय

इको पर्यटन की अवधारणा महत्व एवं विशेषताए 195
डॉ. प्रतिमा यादव, डॉ. प्रतिभा वर्मा

पारिस्थितिक पर्यटन: जंगल शिविर 199
डॉ. निभा ठाकुर, डॉ. एम.एल. गढ़वाल

इको टूरिज्म- म.प्र. के राष्ट्रीय उद्यान अभ्यारण्य एवं जलप्रपात के संदर्भ में 203
डॉ. विजय लक्ष्मी राय

नदियों में बढ़ता प्रदूषण एवं पर्यटन पर प्रभाव 207
डॉ. छाया चन्द्रवंशी

भोपाल झील एवं इकोटूरिज्म (एक पर्यावरणीय अध्ययन) 212
डॉ सरोज श्रीवास्तव

पर्यटन एवं अर्थव्यवस्था (म.प्र. के विशेष संदर्भ में) 214
डॉ. सुमन तनेजा, डॉ. कलिका डोलस

इको पर्यटन, पर्यावरण, पारिस्थितिकी के मध्य अन्तर्सम्बन्ध एवं विकास की संभावनाएं 217
डॉ.निशा मिश्रा, डॉ.श्रीमती प्रवीन झाम

म.प्र. में पारिस्थितिकीय पर्यटन (भोपाल जिले के संदर्भ में) 222
डॉ. फिरोजा बी खान

इको-टूरिज्म- मध्यप्रदेश विशेष रायसेन जिले के संदर्भ में 228
डॉ. एम.एस.रघुवशी

पर्यटन, संस्कृति और पर्यावरण (विशेष संदर्भ- भीमबैठका) 232
डॉ. कीर्ति पस्तोर

भीम बैटका की चित्रकला- संरक्षण एवं पर्यटन विकास 236
डॉ. उषा शर्मा

होशंगाबाद नगर में इकोपर्यटन की संभावनाएं : एक विश्लेषण 240
डॉ. नीतू पवांर

मध्यप्रदेश का सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन 'उज्जैन' 246
डॉ. रंजना श्रीवास्तव

मध्यप्रदेश एवं पर्यावरणीय पर्यटन (चित्रकूट के विशेष संदर्भ में) 249
डॉ. अर्चना श्रीवास्तव

छिन्दवाड़ा जिले के दार्शनिक स्थल एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में पर्यावरणीय पर्यटन का विकास 254
श्रीमती कंचन ठाकुर

पर्यावरण पर्यटन की संभावनाएँ समस्याएँ एवं समाधान 258
श्रीमती डॉ. दीप्ति विश्वास

मध्यप्रदेश में पर्यावरणीय पर्यटन नीति 262
अनस मुस्तुफ़ा एवं कु. सुधा पटेल

पर्यटन एवं पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 266
डॉ. उषा प्रधान, सरिता ठाकुर

पर्यटन-विकास की अपार संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ (म.प्र. के संदर्भ में) 270
डॉ. शकुन शुक्ला

इकोटूरिज्म द्वारा मध्यप्रदेश का आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण 275
डॉ. बसंती जैन

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण की सार्थकता 278
डॉ.मंजुलता पाठक

होशंगाबाद नगर में इकोपर्यटन की संभावनाएं एक विश्लेषण

डॉ. नीतू पवांर
समाजशास्त्र एवं समाजकार्य
शा. गृहविज्ञान महाविद्यालय, होशंगाबाद (म.प्र.)

प्रस्तावना

होशंगाबाद एक प्राचीनतम मानव निवास स्थान रहा है। गौड़ राजाओं के शासन से लेकर मांडू के द्वितीय राजा हुशांग शाह गौरी तक और नर्मदापुर से लेकर होशंगाबाद बनने तक इस शहर ने कई उतार चढ़ाव देखे है। भोपाल रियासत से लेकर ब्रिटिश हुकूमत तक शहर लगातार बदलता रहा। हुशांग शाह के आने से पहले होंशगाबाद नर्मदापुर किनारे बसा एक छोटा सा गाँव था और यहाँ स्थानीय गौंड़ राजाओं का राज था। 1405 में माण्डू के सुल्तान हुशांग शाह यहाँ आये, गौरी ने अपने नाम से होशंगाबाद शहर को बसाया, उसने होशंगाबाद में किले का निर्माण कराया और सन् 1435 में हुंशाग शाह की मृत्यु हो गई तथा 16 वी शताब्दी मे मध्य मुगलों के शासन में आ गया, मराठों और मुगलों की आपसी लड़ाई और अंग्रेजों के प्रादुर्भाव से होशंगाबाद अंग्रेजों के हाथ में चला गया। सन् 1835 में होंशंगाबाद,बैतूल, नरसिंहपुर, को मिलाकर एक जिला बनाया गया था जिसका मुख्यालय होशंगाबाद था और 1843 में होशंगाबाद स्वतंत्र जिला बना दिया गया।

होशंगाबाद अंचल न केवल नैसर्गिक सौदंर्य के लिए पहचाना जाता है बल्कि जीवनदायिनी नर्मदा ने भी इस क्षेत्र की समृद्धि और पहचान को बढाया है। नर्मदा, तवा, बान्द्राभान, आदमगढ़ की पहाड़ियाँ, हर्बल पार्क, सतपुडा नेशनल पार्क, मढ़ई, एवं पचमढ़ी जैसे स्थान इकोपर्यटन के नक्शे पर होशंगाबाद को खास स्थान दिलाते है। हमारे मेले भारतीय संस्कृति की पहचान है। 1961 में हुई जनगणना के अनुसार होशंगाबाद जिले में छोटे-बड़े मिलकर कुल 100 मेले लगा करते थे समय के साथ साथ इनका परिवेश और धार्मिक रंग में रंगे ये मेले आज भी हमारी सांस्कृति धरोहर के रूप में हमारे बीच आयोजित किये जाते है।

उदेद्ष्य

- होशंगाबाद नगर मे इकोपर्यटन स्थल की स्थिति का अध्ययन करना।
- होशंगाबाद नगर में इकोपर्यटन स्थल के विकास हेतु सरकारी प्रयासों की समीक्षा करना।

परिकल्पना

शोधकर्ता यह मानते है कि नर्मदा नदी के तटो का प्राकृतिक सौदंर्य एवं बान्द्राभान मे विन्ध्याचल पर्वत की वादियों में स्थित यह संगम स्थल अद्भुत सुन्दरता प्रदान करता है। वही आदमगढ़ पहाड़ियों के प्रौगेतिहासिक एवं ऐतिहासिक शैलचित्र होशंगाबाद को ईकोपर्यटन स्थल के रूप में विकास के नये आयाम प्रदान कर सकते है।

छिन्दवाड़ा जिले के दार्शनिक स्थल एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में पर्यावरणीय पर्यटन का विकास

श्रीमती कंचन ठाकुर
सहा. प्राध्यापक(समाज शास्त्र)
शा. गृह विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
होशंगाबाद (म.प्र.)

प्रस्तावना

सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों तथा हरे-भरे वनों के बीच रचे-बसे छिन्दवाड़ा अंचल की अपनी एक विशिष्ट सांस्कृतिक महक है। यहाँ बहने वाली हवाएँ इन पर्वत श्रेणियों को छू-कर आती हैं, जो मोहक वातावरण निर्मित कर देती हैं। यहाँ मस्जिदों की अजान और मन्दिरों से गूंजते जयकारे ब्रम्हानन्द की अनुभूति प्रदान करते हैं। यहाँ धर्म का धीर-गंभीर स्वरूप अपना उत्सवी रूप धारण कर लेता है। यहां सभी धर्मों के मतावलम्बी अपने पर्वों और त्यौहारों को इस तरह मनाते हैं कि पूरा अंचल उसकी महक से सराबोर हो उठता है।

वनाच्छादित मनमोहक सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों के बीच स्थित इस छिन्दवाड़ा जिले की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बड़ी मनोरंजक है। यह जिला प्राचीन समय में विदर्भ राज्य का बड़ा भाग हुआ करता था।

वर्तमान में यहाँ की कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना अनुसार 20,90,306 है जहाँ पुरुषों की कुल जनसंख्या 10,63,362 है एवं महिलाओं की जनसंख्या 10,27,004 है। यहाँ से प्राप्त खनिज सम्पदा से देश की कितनी ही योजनाओं को मूर्त रूप प्राप्त हो रहा है। यहाँ की वन सम्पदा का दोहन न जाने कब से हो रहा है। इन्हीं वनों के बीच सदियों से बसी जनजातियां वनों से प्राप्त पत्ते, फल, फूल, लकड़ियां, औषधियों द्वारा अपना जीवन-यापन कर रहे हैं।

जिले के प्राकृतिक भू-भाग का 4212.556 वर्ग किलोमीटर भाग वनों से आच्छादित है जहां वनों एवं पहाड़ों के बीच ऐसे रमणीक दर्शनीय स्थल निर्मित हैं जिनके दर्शन मात्र से नई ऊर्जा व चेतना का संचार होता है। महानगरों से आने वाले निवासी जब यहाँ की वादियों से गुजरते हैं तब स्वतः ही मन प्रस्फुटित हो उठता है।

उद्देश्य

- छिन्दवाड़ा जिले में स्थित दर्शनीय स्थलों का अध्ययन कर इको-पर्यटन की संभावना ज्ञात करना अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है।
- छिन्दवाड़ा जिले की सांस्कृतिक परम्पराओं का अध्ययन करना।

EFAHPSC 2016

www.efahpsc.com

3rd INTERNATIONAL CONFERENCE

Environmental Friendly Agriculture, Horticulture in Planning of a Smart City

12th-14th December-2015, Bhopal M.P. (India)

jointly organized / supported by

Janparishad, MANIT, NHB, EPCO, MPCST, JMBVSS, IARA and SusTranCon (USA)

ABSTRACTS / PROCEEDINGS

Jointly Organized / Supported by :

JANPARISHAD a saga of constructive activities | राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड National Horticulture Board | SusTranCon Sustainability Transition Consulting USA www.SusTranCon.org | EPCO | MANIT | M.P. Council of Science & Technology | JMBVSS Jhameshwar Mahila Bal Vikas Evam Sikshan Samiti | iara Institute of Advance Research & Applications | International Council of People

Janparishad - M83 Kotra Sultanabad Bhopal, www.janparishad.com Cell : 09425015116

4th International Conference

Environment and Agriculture in the U.N. Sustainable Development Goals
17th-19th December 2016

Editor
Dr. (Mrs) Mukta Shrivastava
Er. Samta Shrivastava

Associate Editors
Er. Abhilash Thakur
Mahendra Joshi
Er. Ekta Shrivastava
Pt. Brajendra Tiwari

Conference Venue
Hotel Noor-Us-Sabah Palace
VIP Road, Kohefiza, Bhopal (M.P.) INDIA

Conference Secretariat
M83, Kotra Sultanabad, Bhopal (M.P.) India
janparishadbhopal@gmail.com / janparishadconference@gmail.com

Jointly Organised by
Janparishad, MANIT, EPCO, MPCST, JMBVSS & SusTranCon
www.janparishad.com & www.eaunsdg.com / contact : 9425015116

© MANIT & Janparishad
M83, Kotra Sultanabad, Bhopal (M.P.) India.

Printed by
Saksham Publication
M.P. Nagar, Zone-II, Bhopal

ISBN No. 978-93-5265-673-8
An International Proceeding Book.

28	Dr.Smt.Saroj Shrivastava	Climate Change [Id 105]	119
29	Manju Mani and Dr. Prabha Bhatt	The role of schools for providing environmental education in India for sustainable development [Id 107b]	120
30	Dr. Mamta Prajapati and Shraddha Chaturvedi	Impact of Amarkantak thermal power plant, Chachai Anuppur of Shahdol division (M.P.) on soil of surrounding areas [Id 112]	126
31	Dr.Shalini Saxena	Performance evaluation of waste water from ekant park by sf constructed wetland system using reed bed system[Id 164]	132
32	D.S. Mutkule, Z.P. Patel and Susheel Singh	Persistence and dissipation of some novel insecticides in/on brinjal under south Gujarat Condition[Id 10]	136
33	Shalini Chakraborty	Underutilized fruits: Need of the present for better future [Id 170]	140
34	Mukta Shrivastava	Study of some home purifier plants with special reference to peace lily-Spathiphyllum [Id 01]	144
35	Dr. Aparnaa Laskar	Agricultural waste and it's Management [Id 136]	145
36	Dr. Archana More, Dr.D.K. Billore	Economic and aesthetic value of wetland ecosystems with special reference to Tapti river in Burhanpur district [Id 86]	146
37	Fiza Naseer and Apoorva Singh	Using tragedy of commons, the economic valuation of Bshoj wetland [Id 97]	148
38	Kalpana singh and Dr. Alka awasthi	Environment and agriculture in the U.N. sustainable development goals	150
39		Seed your future campaign [Id 28]	
40	Mold Rafiq Bhatt and Dr. Prabha Bhatt	Rural women and agricultural production in India: problems and prospects [Id 118]	155
41	Dr. Rashmi Ahuja	Colorometric studies of occurance of a few hazardous elements in drinking water[Id 169]	158
42	Sabira Mushtaq and Shail Bala Sanghi	Women in agriculture[Id 91]	159
43	Satish Singh Baghel, U.S. Bose, S.S. Singh and Kashyap Kumar Mishra	Effect of integration of organic and inorganic fertilizers on sustainable production of bottle gourd [*Lagenaria siceraria* L.] [Id 188]	164
44	Dr. (Mrs.) Peenu Mahendra and Dr. Pratibha Singh	To standardize media and the optimum chemical and physical parameters for *in vitro* seed germination of *Withania somnifera* (L.) DUNAL [Id121]	168
45	Dr. Neetu Pawar	Enviornmental education in present scenario [Id 37]	171
46	Dr. Anushka M. Nayak	Sustainable development, environmental governance and legal implications[Id 12]	172
47	Dr. Anita Shinde, Dr. Mohan Shinde, Greeshama Jain	Role of phytochemicals in management of diabetes [Id 108a]	175
48	Manisha Dubey	Health care delivery in Madhya Pradesh (prevention and cure) A study in health care geography [Id 78]	180
49	Dr. Mahendra Bhatanagar and Greeshama Jain	Organic farming – an eco-friendly way to sustainable agriculture [Id 108]	182
50	Dr. Bhavna Shrivastava	नारी की पर्यावरण संरक्षण में भूमिका[Id 130]	185
51	Smt. Kanchan Thakur	रायसेन जिले में कृषि उत्पादन द्वारा रोजगार की संभावना[Id 131]	187
52	Dr. Seema Pathak	Role of Media in environmental concerns and sustainable development : with special reference to India issues and challenges [Id 157]	189
53	Dr. Uttam Singh Chauhan	Sustainable development: dovelopment ecosophy & green Political theory[Id 153]	194
54	Dr. Deepa S. Kumar	The crucially transformative 5 ps of UN's sustainable Developments goals[Id 151]	198
55	Dr. Firoza Bee Khan and Dr. Dipti Bishwas	Impacts of green house	200
56	Dr. Rashmi Jain, Dr. Sandhya pimplapurr and Dr. Kiran dubey	Artificial colours: a silent threat to environment[Id 40]	202
57	Dr. Shubh Laxmi Shivani Kapse and Shri Sankalp Kishnani	भारत मे जल संरक्षण और वर्षा-जल संचयन की उपयोगिता [Id 106]	204

ABSTRACTS

1	Dr. Anita Chowbey	Sustainable development and Indian society [Id 15]	210
2	Dr. Jyoti Saxena	A study on the transformation of agriculture land into commercial land- "a destructive phenomenon in the future context of India." [Id 51]	210
3	Priyanshu Tripathi*, Vishakha Sharma**	Future of food and futuristic approaches for sustainability [Id 52]	210
4	Ar Mamta Saxena and Dr. Supriya Vyas	Periurban delimitation in reference to sustainable development [Id 69]	211
5	Shubham Kumar Sharma, Naman Jain	Refuse derived fuel it's implications and challenges in India [Id 102a]	211
6	Shanabanu H. Malek and J. R. Chavda	Role of women in agriculture [Id 31a]	212
7	Anita Shinde and Mohan Shinde	Molecular modeling and drug design [Id 45]	212
8	Ram Krishna Shrivastava	Current scenario of organic farming practices in Madhya Pradesh : a study [Id 77]	213
9	Manisha Dubey	Health care delivery in Madhya Pradesh (prevention and cure) A study in health care geography [Id 78]	214
10	Nitaigour Premchand Mahalik	Technology systems for precision agriculture: Scope for education and research [Id 79]	214

रायसेन जिले में कृषि उत्पादन द्वारा रोजगार की संभावना

श्रीमती कंचन ठाकुर
सहा. प्राध्यापक (समाजशास्त्र)ए शा. गृह विज्ञा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, होशंगाबाद (म. प्र.)

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही भारत में कृषि से संबंधित समस्याओं का समाधान करने तथा ग्रामीण जीवन का बहुमुखी विकास करने के लिये व्यापक प्रयत्न आरम्भ कर दिये गये थे। आज भारत का ग्रामीण विकास मंत्रालय ग्रामीण क्षेत्रों में सुनियोजित विकास की नई योजनाऐ लागू करके ग्रामीण विकास के लिये महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इन योजनाओं का उद्देश्य गांव में रहने वाले गरीबों के जीवन–स्तर में सुधार करना और समानता पर आधारित एक नई समाजिक व्यवस्था की स्थापाना करना है। विभिन्न ग्रमीण विकास कार्यक्रमों के द्वारा जहा एक और निर्धनता को दूर करने का प्रयत्न किया जा रहा है वही दूसरी ओर ऐसे कार्यक्रमों को विशेष महत्व दिया जा रहा है जिनकी सहायता से ग्रामीण रोजगार को बढ़ाया जा सके।

हमारे म. प्र. की राजधानी भोपाल के समीप लगा हुआ जिला रायसेन जो वर्तमान में कृषि के क्षेत्र में काफी उन्नती कर रहा है। उन्नती एवं विकास के मायने केवल कृषि के क्षेत्र में उत्पादन को बढ़ाना नहीं है बल्कि कृषि के माध्यम से वहां निवास कर रहे ऐसे भूमिहीन बेराजगार लोगो को रोजगार उपलब्ध कराना एवं उन्हें भी विकास का हिस्सा बनाना है, तभी सही मायने में उस क्षेत्र को विकसित माना जायेगा।

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य –जिले के 10.10 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे है उन्हें स्थानीय कृषि संसाधनों के माध्यम से रोजगार के साधनों की उपलब्धता को ज्ञात करना।

प्रस्तुत शोध में अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूचि, देवनिदर्शन आदि वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग कर 100 परिवारों का अध्ययन किया गया एवं तथ्य प्राप्त कर विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

म.प्र. के अन्य जिलो के समान रायसेन जिला भी कृषि प्रधान जिला हैं । यहां की कुल जनसंख्या 14,50,000 है जिसमें से 70 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आधारित है।

रायसेन जिले में 31 अगस्त 2016 की स्थिति में गरीबी रेखा के नीचे 29,688 परिवार अन्त्योदय परिवार के रूप में पंजीकृत हैं जिनकी कुल सदस्य संख्या 1,34,523 है। इस तरह 10.10 प्रतिशत गरीबी रेखा के जीवन यापन कर रहे हैं। आंकड़ों की दृष्टि से रायसेन जिला का प्रमुख खाद्यान उत्पादन 2015–16 की स्थिति में इस प्रकार है :–

तालिका क्र.– 01 : प्रमुख खाद्यान उत्पादन

खरीफ फसले 2015				रबी फसलें 2015–16			
फसल का नाम	बोया गया क्षेत्र	उत्पादन (मी. टन)	प्रति हे. उत्पादकता	फसल का नाम	बोया गया क्षेत्र	उत्पादन (मी. टन)	प्रति हे. उत्पादकता
धान	98620	340240	34.50	गेहूं	242000	847000	35.00
सोयाबीन	94400	15670	1.66	चना	118000	19240	11.80
अरहर	43430	70830	16.31	मसूर	22500	20930	9.30
अन्य				अन्य			
योग	280840	455110		योग	397710	1024570	

तालिका से स्पष्ट हो रहा है कि यहा धान एवं गेहूँ का उत्पादन सर्वाधिक है तथा दलहन में तुअर दाल एवं चना दाल का उत्पादन सर्वाधिक है।

उत्पादन को ध्यान में रखते हुऐ यहां सिचाई के साधन भी पर्याप्त है :–

तालिका क्र.–02 : कृषि में सिचाई के साधनों की उपलब्धता

क्रमांक	सिचाई साधन	संख्या	कुल सिंचित क्षेत्र (हे.)
01	नहरो से	131	85451
02	नल कूप	22464	176143
03	कुऐ	15837	54308
04	तालाब	166	4331
			योग 381292

तालिका से स्पष्ट होता है कि यहां सिचाई के साधनों की उपलब्धता यहा के खाद्यान उत्पादन की दृष्टि से पर्याप्त हैं ।

ENVIORNMENTAL EDUCATION IN PRESENT SCENARIO

Dr. Neetu Pawar
Deptt. of Sociology & Social work, Govt. Home Sc.P.G. College Hoshangabad (M.P.)

1. **Introduction :** Environment is defined as surrounding or conditions influencing development or growth. It can be understood as a system which includes all living and non-living things. Environment is a global concept to day and first in Environmental Education is Environment awareness Environment awareness is an approach to learning. Environmental Education must encouraged where at first student become aware of environment. Than they recognize or review the relationship between humans and nature. The students get knowledge and skill from the teachers to solve the e environment problem. The teachers motivate to develop the student's attitude to participates various environment protection programs in favor of environment. Environment education is a process that allows individuals to explore. Environment issues, engage in problem solving and take action to improve the environment. As a result, individuals develop a deeper understanding of environmental issues and have the skills to make informed and responsible decisions. Environmental Education is a new focus for education. It is a way of helping individual and societies to resolve fundamental issues relating to the current and future use of the world's resources. However, simply raising awareness of these issues is insufficient to bring about change.
2. **Goals of environment education :** Environmental Education aims to develop
   - Awareness, sensitivity and a positive attitude towards environment.
   - Knowledge and understanding of the ecological process.
   - Greater participation in activities that to overcome environmental challenges.
3. **Importance of environment educaiton**
   I. Environmental education must strongly promote the need for personal initiatives and social participation to achieve sustainability. Environmental Education is important for understanding the basis of our existence and those around us. Hence this stresses on the subject. Environmental Education together with sound legislation, sustainable management, and responsible actions by individuals and communities, is an important component of and effective policy frame work for protecting and managing the environment.
   II. The concept of environment education is not a new one as a major part of human knowledge is derived from nature, Environment pollution in different forms continues to trouble us but Environmental Education makes it possible for us to understand the clear outcome of human activity on the environment. Those who want to purser Environmental Education seriously shall also study related disciplines such as physical science, biological science, social science and applied science. Environmental Education can be pursed at under graduate and post graduate level.
4. **Measures taken for consciousness**
   I. Population awareness program should be started from village to towns.
   II. Students are to be taught to restore and construct their surroundings.
   III. The objective based training to be made to love for plants and animals.
   IV. They must be sensitive to environmental problems
   V. They must require skills for solving environmental problems.
5. **Conclusion**
   - ❖ The problem of environment abuse is a serious one and needs to be addressed at the local, national and international levels. To achieve a good quality of life on earth for all living beings, it is essential to spread awareness about and educate humankind in sustainable development and environment problems.
   - ❖ Online courses on Environmental Education with a thrust on the practical, skill and value development aspect could be development for the teachers, educators, administrators, development workers as any person interested to become knowledge and aware of environment issues. On the lines of Green Teacher Program of the centre for Environmental Education.

Environmental Education must be such that the student themselves bring about a positive change and improve their own surroundings and communities by taking responsibility become proactive community minded citizens, sustainable environmental quality awareness and also with Green Chemistry.

Assessing and Criticising

Historical Writings of Prof. Suresh Mishra

प्रो. सुरेश मिश्र का इतिहास लेखन

मूल्यांकन एवं समालोचना

Chief Editor
Prof. Sanjay Swarnkar

© Editor

First Edition : 2019

ISBN : 978-81-942233-8-2

9 788194 223382

Radha Publications

4231/1, Ansari Road, Daryaganj

New Delhi-110002

Phone : 23247003, 23254306

Email : radhapub@gmail.com

Central Indian Historical Research Foundation

Gwalior, M.P

Published by Nitin Garg for Radha Publications and printed

समय की शिला पर इतिहास और संस्कृति

डॉ. रामबाबू मेहर
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
शास. गृहविज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय
होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)

लेखक का नाम	:	सुरेश मिश्र
पुस्तक का नाम	:	समय की शिला पर इतिहास और संस्कृति
प्रकाशक	:	राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
संस्करण	:	2016
पृष्ठ संख्या	:	214
मूल्य	:	550.00

पुस्तक 'समय की शिला पर' इतिहास और संस्कृति, प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. सुरेश मिश्र के उन चुनिंदा लेखों का संग्रह है, जो उन्होंने अलग-अलग समय में लिखें हैं। ये लेख इतिहास, संस्कृति और प्रकृति के साथ गहरा तादात्म्य स्थापित करते हैं, साथ ही डॉ. मिश्र लेखों के माध्यम से जो वर्गीकरण लेकर चलते हैं, उसे स्पष्ट करने का भी प्रयास करते हैं, जैसे पहले ही लेख में वे भारत की आत्मा को छूने वाली उस बात को रेखांकित करते हैं जिसमें यह भारतीय संस्कृति पूर्ण रुप से एकाकार है। वे कहना चाहते है कि भारतीय मानस में विभेदकारी तत्वों ने इस हद तक स्थान बना लिया है कि सामान्य व्यक्ति ही नहीं बल्कि बौद्धिक वर्ग भी इससे अछूता नहीं रहा है। वह भेद कर ही नहीं पा रहा है कि उसकी आंखों पर विभेदकारी चश्मा स्वतः ही स्थापित हो चुका है। वास्तविक रुप से वे भारत की उस धरोहर की बात करना चाह रहे हैं जिसे वर्तमान में समावेशी समाज का नाम दिया गया है और अपनी बात पाठकों तक पहुचाने के लिये जिस प्रतीक को उन्होंने चुना है, वह अमीर खुसरो हैं जिनकी रुबाईया, कव्वाली, संगीत और हिन्दवी (बाद में उर्दू कहलाई) भारत के जन-मानस में रची-बसी है जो भारत की साझी संस्कति का द्योतक है।

युग-युगीन मध्य प्रदेश

Madhya Pradesh through the ages

Patron:
Dr. Induprabha Tiwari

Editors:
Dr. Mamta Chansoria
Ajay Prakash khare

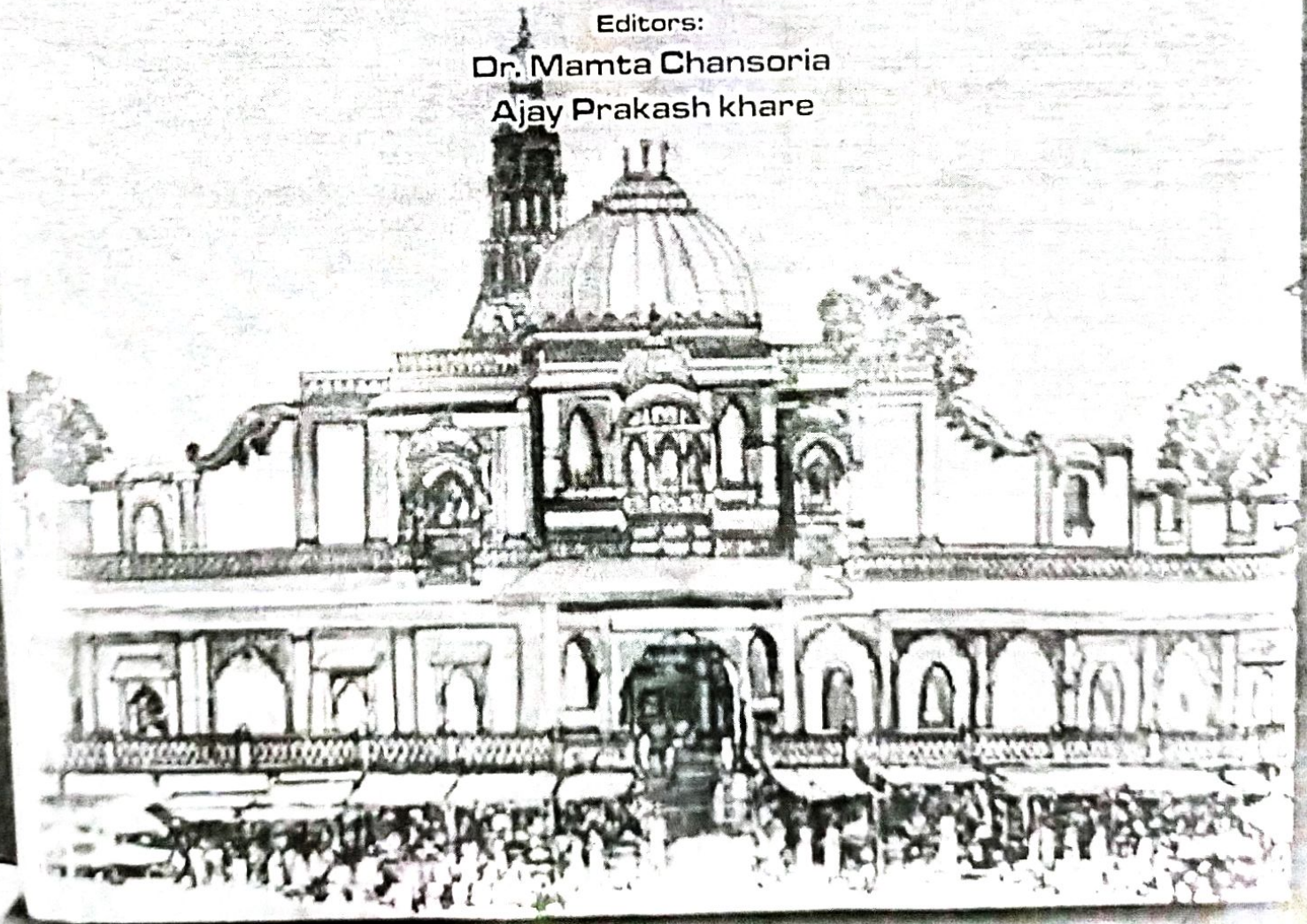

युग–युगीन मध्यप्रदेश

Madhya Pradesh through the ages

© Editor, 2016

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any f
by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording, or any info
storage and retrieval system, without permission in writing from copyright holder.

ISBN : 978-81-93251706

First Edition in 2016 by:

B.K. Books International
3/79, Nirankari Colony,
Delhi-110009
Ph.: 011-27601283
E-Mail: bkbooksinternational@gmail.com

Distributors:

Bookwell
3/79, Nirankari Colony,
Delhi-110009
Ph.: 011-27601283
E-mail: bkwell@nde.vsnl.net.in
bookwelldelhi@gmail.com
Website: www.bookwellindia.com

11

भोपाल रियासत में तौल व माप की विभिन्न पद्धतियाँ (18वीं–19वीं शताब्दी के संदर्भ में)

–डॉ. रामबाबू मेहर

परिचय

उत्तर मुगलकाल में मुगलों की कमजोर स्थिति का लाभ उठाकर कई स्वतंत्र सत्ताओं की स्थापना हुई। इसी समय 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में 1708 ई. में भोपाल रियासत की स्थापना अफगान सरदार दोस्त मुहम्मद खाँ द्वारा की गई। रियासत की स्थापना के बाद नबाब दोस्त मुहम्मद खाँ ने इस क्षेत्र में मुगल–अफगान प्रशासनिक व्यवस्था को लागू किया। यह व्यवस्था प्रशासन के विभिन्न क्षेत्रों में दिखाई देती है। तौल एवं माप की पद्धतियों में भी इसी व्यवस्था को अपनाया गया। क्योंकि जो तौला, जरीब, मन और सेर का प्रचलन मुगल साम्राज्य में था लगभग वैसी ही माप और तौल की पद्धतियाँ भोपाल रियासत में प्रचलन में थीं। साथ ही भोपाल के आसपास की रियासतों में जो प्रकार चलन में थे उनका भी रियासत के सीमाई क्षेत्रों में प्रचलन था। यहाँ प्रचलित नाप व तौल की विभिन्न पद्धतियों ने हमेशा विदेशियों को प्रभावित किया हैं। साथ ही इस विषय पर शोध व लेखन करने वाले शोधार्थियों को भी कम आश्चर्यचकित नहीं किया है। और यहाँ प्रत्येक क्षेत्र में माप व तौल की गतिविधियाँ भिन्न रही हैं। संभवता जो वस्तु मसूलीपट्टनम में, जिस माप में, जितने धन में प्रापत थी, हो सकता है बुरहानपुर या सिरोंज में वह दूसरे भाव पर उपलब्ध हो। इसी तरह भोपाल रियासत के गाँव तथा बाजारों में भी भिन्नता प्राप्त होती है।

लक्ष्य एवं उद्देश्य

1. भोपाल रियासत की माप–तौल संरचना को समझना और उस पर पुर्नविचार करना।
2. अध्ययन का मूल उद्देश्य माप–तौल के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत करना तथा उसके शिथिल हुए अवयवों को पुर्नजीवित करना।
3. सामान्य उद्देश्य के साथ, इस क्षेत्र में शोधार्थियों की रुचि बनाये रखने का भी प्रयास करना।

लोक स्मृति एवं संस्कृति

कर्मवीर सत्यदेव सिंह स्मृति ग्रंथ

संपादक

डॉ. आनन्द कुमार सिंह

डॉ. सानन्द कुमार सिंह

पुस्तक में संकलित निबंध मूल लेखक के ही हैं और उनसे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें प्रकाशित किसी भी सामग्री का किसी प्रकार और किसी भी रूप में उपयोग करने के लिए प्रकाशक, लेखक अथवा संपादक से लिखित अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य है।

प्रकाशक
प्रतिश्रुति प्रकाशन
7ए, बेंटिक स्ट्रीट
कोलकाता-700 001
दूरभाष : 033 22622499
mail.prakashan@gmail.com

© आनन्द कुमार सिंह
सानन्द कुमार सिंह

प्रथम संस्करण : 2018

शब्दांकन, आवरण-आकल्पन
प्रतिश्रुति कला विभाग

मुद्रक
ग्राफिक्स एंड टेलीमेटिक्स
7ए, बेंटिक स्ट्रीट
कोलकाता-700 001

मूल्य
₹ 720.00

LOK : SMRITI EVAM SANSKRITI
Karmveer Satyadev Singh Smriti Granth
Edited by Dr. Anand Kumar Singh and
Dr. Sanand Kumar Singh

Printed in India

ISBN : 978-93-83772-69-8

बहुसंस्कृतिवाद

■ **डॉ. रामबाबू मेहर,** सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
शासकीय गृहविज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, होशंगाबाद (म.प्र.)

बहुसंस्कृतिवाद का सीधा सा अर्थ है– विभिन्न संस्कृतियों का एक साथ स्थापन, संचालन और गतिमान होना। इसका एक अर्थ यह भी हो सकता है कि एक देश, समाज ओर समूहों आदि में भिन्न-भिन्न तरह के विचारों की एक साथ उपस्थिति। वैसे तो यह अवधारणा पहले से ही अधिकांश देशों में व्याप्त थी परंतु इसका अनुभव बहुत कम था। दरअसल, 18वीं-19वें शताब्दी में जब व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा अभिव्यक्ति की आजादी का दृष्टिकोण मुखर हुआ तब विभिन्न सांस्कृतिक समूहों ने, जहां वे थे, तथा जिस भी संदर्भ में उनका अस्तित्त्व था वहां अपनी पहचान को स्थापित करने का काम किया। इसको राष्ट्र-राज्यों की स्थापना से और बल मिला। लेकिन 18-19वीं सदी के बहुसंस्कृति के दौर में बहुसंस्कृतिबाद को एकल मान्यता के रूप में पहचान मिली। 20वीं शताब्दी में जबकि विश्व तानाशाही की और तेजी से बढ़ रहा था, श्रेष्ठ नस्ल की पहचान को प्रमुख विचार की तरह लिया जाने लगा था और जर्मनी इसका अगुआ राष्ट्र बनकर आर्य श्रेष्ठता के दावे को मजबूती से मनवाने की एकमात्र योग्यता मान रहा था, तब वहां अल्पसंख्यकों के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लग गया था। यह विश्व का वह दौर था जब अधिकांश शक्तिशाली देश अपनी संस्कृति की महानता ओढ़े एकल सांस्कृतिक राष्ट्र की ओर बढ़ रहे थे।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देख जाए तो एशिया, अफ्रीका तथा अमेरिका सांस्कृतिक रूप से विविधता मूलक विचारों से भरे हैं और प्रारंभिक प्राचीन समाजों के परिवेश में निरंतर बहुसांस्कृतिक मान्यताओं में स्वयं को विकसित कर रहे हैं। सही अर्थों में माना जाए तो बहुसंस्कृतिवाद के ये ही अगुआ हैं।